33

भारतीय संस्कृति और राम भक्ति-साहित्य

डॉ. दीप्ति
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
हिन्दू कॉलेज, अमृतसर
मो. 9501077702

प्रत्येक समाज में निरन्तर प्रवाहमान अन्तःप्रक्रिया का नाम संस्कृति है। मानव जीवन की विभिन्न क्रियाओं की अभिव्यक्ति संस्कृति में ही होती है। संस्कृति के माध्यम से ही मानव उच्च गुणों को आत्मसात करता है। संस्कृति ही मानवीय वृत्तियों का संशोधन कर उसे उदार तथा सुसंस्कृत बनाती है। वर्ल्ड यूनिवर्सिटी एन्साइक्लोपीडिया के अनुसार, "संस्कृति समाज विशेष की जीवन-पद्धति है। यह आध्यात्मिक, बौद्धिक और कलात्मक व्यवहारों की ऐसी समग्रता है, जिसमें एक समूह अपनी परम्परा, प्रवृत्तियों, सामाजिक रीतियों, नैतिक आचारों, कानूनों तथा सामाजिक संबंधों के साथ सहभागिता करता है।"[1] अतः व्यक्ति का सर्वांगीण विकास संस्कृति द्वारा ही सम्भव है।

तारकनाथ बाली के अनुसार, "संस्कृति सामाजिक जीवन का वह व्यापक धर्म है, जिसमें समाज की समग्र साधना, आकांक्षा एवं उपलब्धि आ जाती है।"[2] इसके अतिरिक्त संस्कृति में साहित्य, लोक-जीवन, संगीत, कला और सामान्य नागरिक जीवन समाविष्ट होते हैं।

सुयोग्य मनुष्य आरम्भ से ही समाज से संस्कारों द्वारा संस्कृति का अर्जन करता है तथा समय के साथ-साथ अपने सामर्थ्य और क्षमताओं के माध्यम से संस्कृति को समुन्नत बनाने में अपना योगदान देता है। इस प्रकार मनुष्य के भूत, वर्तमान एवं भावी जीवन की गाथा संस्कृति में समाहित होती है।

संस्कृति के सब गुणों को समेटे भारतीय संस्कृति सहज ही भारत की उत्कर्ष गाथा का बखान करती है। दुनिया की सबसे प्राचीनतम भारतीय संस्कृति अनेक